ओ३म्

# 'पं. चमूपति और महाशय जैमिनि दो सरल हृदयों का प्रथम मिलन'

**–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

पं. चमूपति जी और महाशय जैमिनि सरशार आर्यजगत की जो महान विभूतियां रही हैं। दोनों पंजाब से सम्बन्ध रखती हैं। उक्तों दोनों महापुरुषों के जीवन चरित आर्य जगत के विख्यात विद्वान पं. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने लिखे हैं। पं. चमूपति जी की जीवनी आपने कविर्मनीषी नाम से लिखी हैं। इस पुस्तक में आपने चमूपति जी और महाशय जैमिनी जी के प्रथम मिलन का वृतान्त भी लिखा है जिसे हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

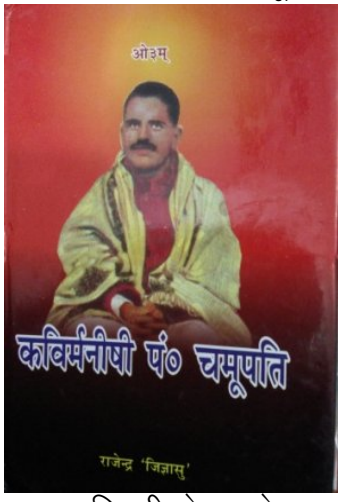


एक बार मुलतान डवियन के एक सज्जन लाहौर में किसी काम के लिए आये। उनके मन में पण्डित चमूपति जी से भेंट करने की इच्छा उत्पन्न हुई। उन्होंने पं. चमूपति जी के निवास स्थान का पता पूछा और वहां पहुंच गये। पण्डित चमूपति जी के सम्मुख उपस्थित होकर उन्होंने उनसे नमस्ते की। पंडित चमूपति जी ने उनसे पूछा कि महाशय जी आप कहां से पधारे हैं? अतिथि महानुभाव ने उत्तर दिया कि वह खैरपुर सादात से आये हैं। चमूपति जी उनसे बोले कि वहां तो उनके भी एक बहुत अच्छे मित्र रहते हैं। अतिथि ने उनसे उनके मित्र नाम का नाम पूछा? पंडित चमूपति जी ने उन्हें बताया कि खैरपुर सादात में उनके एक बहुत अच्छे मित्र महाशय जैमिनी सरशार रहते हैं। चमूपति जी ने उनसे पूछा कि क्या वह उन्हें जानते हैं? **अतिथि खड़े हुए और बोले कि इस सेवक का नाम ही जैमिनी सरशार है।**

यह सुनकर चमूपति जी अपने आसन से खड़े हुए और जैमिनी जी का आलिंगन किया। अपने हृदय से लगाकर उन्हें स्नेहासिक्त होकर प्यार दिया। य**ह भेंट आर्यसमाज के दो महान साहित्यकारों की प्रथम भेंट थी।** इससे पूर्व यह दोनों महान व्यक्ति एक दूसरे को उनके नामों से ही जानते थे परन्तु कभी कहीं मिले नहीं थे। सरलता व विनम्रता में दोनों ऋषि भक्त विद्वान एक जैसे थे। दोनों एक दूसरे के दर्शन व परिचय को पाकर गद्गद् हो गये। पं. राजेन्द्र जिज्ञासु जी लिखते हैं कि आचार्य चमूपति जी हृदय से भूमण्डल प्रचारक मेहता जैमिनी जी की साहित्यिक प्रतिभा की प्रशंसा किया करते थे। जैमिनी जी ने अपने साधनों व धन से विदेशों में जाकर वेद प्रचार किया। उन्हें बड़ी संख्या में ग्रन्थों का लेखन भी किया है। उनकी एक लघु कृति संसार पर ऋषि दयानन्द का जादू है जिसे बहुत पहले रामलालकपूर न्यास, सोनीपत ने प्रकाशित किया था। मेहता जैमिनी का अधिकांश व प्रायः समस्त साहित्य उर्दू में है जो आर्य समाज में उर्दू न जाने वाले लोगों के कारण प्रायः अप्रासांगिक हो गया है। उनका साहित्य अब कहीं उपलब्ध नहीं होता। आर्यसमाज के विद्वानों, नेताओं और पुस्तकों के प्रकाशकों को इस पर विचार करना चाहिये। मेहता जैमिनी जी की एक पुस्तक **''गोमाता विश्व की प्राणदाता''** भी है। हमारी प्रार्थना पर मैसर्स विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली'' के स्वामी महाशय अजय आर्य जी ने प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी से इसका हिन्दी अनुवाद कराकर प्रकाशित किया है। ओ३म् शम्।

**–मनमोहन कुमार आर्य**
**पताः 196 चुक्खूवाला–2**
**देहरादून–248001**
**फोनः09412985121**

Created using easyPDF Printer
Click here to purchase a license to remove this image